प्रत्ययवाद (Idealism)

Philosophy
Part - II (H)
Paper - II

Q ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त के रूप में प्रत्ययवाद का मूल्यांकन

→ ज्ञानशास्त्रीय प्रत्ययवाद वह सिद्धान्त है, जिसके अनुसार ज्ञान का विषय या ज्ञेय ज्ञान पर निर्भर है। इसका ठीक उल्टा सिद्धान्त वस्तुवाद (Realism) है, जो ज्ञेय या ज्ञान के विषय को ज्ञान से स्वतन्त्र मानता है। यह सिद्धान्त ज्ञान और ज्ञेय के बीच सबंध की व्याख्या करता है। क्या ज्ञेय का अस्तित्व ज्ञाता पर निर्भर या उससे स्वतंत्र है? इसी प्रश्न के उत्तर स्वरूप प्रत्ययवाद तथा वस्तुवाद ये दो सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए है।

प्रत्ययवाद की सामान्य मान्यता - ज्ञेय या ज्ञान का विषय ज्ञाता पर निर्भर है। ज्ञाता से स्वतंत्र या असंबद्ध होकर ज्ञेय अपना अस्तित्व नहीं रख सकता।

इसके अनुसार ज्ञान परमार्थ (ultimate) है। व्यक्ति अपने ज्ञान की सीमा से बाहर नहीं जा सकता अज्ञात एवं अज्ञेय के विषय में कुछ भी कहना असंभव है।

प्रत्ययवाद साधारण अनुभव से मेल नहीं खाता। जिसे हम देखते है। उसका स्वतंत्र अस्तित्व भी मान लेते है। यह समझ में नहीं आता कि ज्ञान का विषय अनुभवकर्ता पर निर्भर है। परन्तु गंभीरता से सोचने पर ऐसा प्रतीत होता है कि ज्ञेय का अस्तित्व ज्ञाता से स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता। उदाहरणार्थ, - एक छड़ी हवा में सीधी दीख पड़ती है, परन्तु वही छड़ी पानी में आधी डुबी रहने पर टेढ़ी दीख पड़ती है, परन्तु वही छड़ी देखने पर ज्ञान के विषय की स्वतंत्र सत्ता में संदेह होना स्वाभाविक है।

Scanned by CamScanner

ज्ञान शास्त्रीय प्रत्ययवाद का स्पष्ट उदाहरण पाश्चात्य विचारक बर्कले (Berkeley) के दर्शन में मिलता है। इनके अनुसार, प्रत्यय ही परम तत्व हैं तथा वस्तुओं का अस्तित्व ज्ञाता या अनुभवकर्ता पर आश्रित है इसके अतिरिक्त पाश्चात्य विचारक ग्रीन, (T.H.Green), (Edward Caird) तथा ब्रैडले (Bradley) आदि प्रत्ययवाद के समर्थक हैं। भारतीय दर्शन में बौद्धों का योगाचार- मत प्रत्ययवाद का समर्थक है। इसके अनुसार चेतना से स्वतंत्र कोई वस्तु नहीं है; क्योंकि स्वतंत्र वस्तु का हमें कभी ज्ञान नहीं होता।

प्रत्ययवाद को प्रमाणित करने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए जाते हैं-

(i) वस्तु के स्वरूप के विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि ज्ञेय का अस्तित्व ज्ञाता या अनुभवकर्ता से स्वतंत्र नहीं है। जिसे हम वस्तु कहते हैं, वह रूप, रस, गंध, आकार आदि के सम्मिश्रण के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। ये गुण भी सचमुच हमारे संवेदनों के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं ये संवेदन ज्ञाता को प्रत्यय के रूप में प्राप्त होते हैं। अतः वस्तुएँ अंततः ज्ञाता के मन के प्रत्ययमात्र हैं। इनका अस्तित्व ज्ञाता द्वारा प्राप्त संवेदनों पर आश्रित है। इसलिए बर्कले ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Esse est Percipii' में वर्णन किया है;

(ii) प्रत्ययवाद का समर्थन आंतरिक संबंध- सिद्धान्त (Theory of internal relations) में आधार पर भी किया जाता है। आंतरिक संबंध सिद्धान्त के अनुसार संबंध पद अपनी सत्ता के लिए संबंध पर आश्रित हैं तथा संबंध से स्वतंत्र इनका अस्तित्व नहीं होता। प्रत्ययवादी सभी सिद्धान्तों को आंतरिक मानते हैं। ज्ञाता तथा ज्ञेय के बीच संबंध भी आंतरिक है।

Scanned by CamScanner

(iii) अनुभव की सापेक्षता (Relativity of experience) भी प्रत्ययवाद को पुष्ट करती है। हम अनुभव में पाते हैं कि खाद्य पदार्थ किसी को स्वादिष्ट मालूम पड़ता है, तो दूसरे को स्वादहीन। एक ही चाय किसी को अधिक मीठी प्रतीत होती है तो दूसरे को फीकी।

(iv) वस्तु का अस्तित्व कायम रखने के लिए उसे ज्ञान से संबंद्ध होना आवश्यक है। यदि मान ले कि कोई वस्तु ज्ञान से स्वतंत्र या असंबद्ध है, तो उसका ज्ञान नहीं हो सकता। वह वस्तु अज्ञात हो जायी हो और उसका अस्तित्व सिद्ध नहीं हो सकता। इस प्रकार ज्ञान से स्वतंत्र वस्तु का अस्तित्व असिद्ध रह जाता है।

(v) प्रत्ययवादी कभी-कभी यह तर्क देते हैं कि वस्तु का अस्तित्व ज्ञान से स्वतंत्र मानने पर एक तार्किक कठिनाई उत्पन्न हो जाती है। यदि कोई वस्तु ज्ञान से पूर्णतः असंबद्ध हो तो फिर ज्ञान में वह ज्ञान के साथ संबंद्ध कैसे हो सकती है? ये दोनों असंबंद्ध हो तो फिर ज्ञान में वह ज्ञान के साथ संबंद्ध कैसे हो सकती है? इस कठिनाई से बचने का एक ही उपाय है कि वस्तु को ज्ञान से असंबंद्ध न मानकर वस्तु को ज्ञान पर निर्भर जान लिया जाए।

प्रत्ययवाद की समीक्षा-

ज्ञान प्रक्रिया में ज्ञान का निश्चय ही महत्वपूर्ण स्थान है। परन्तु, जब प्रत्ययवाद ज्ञेय को ज्ञान पर आश्रित बताता है, तब उसके कथन को स्वीकार करने में कोई कई कठिनाइयां आ जाती हैं G.E. Moore (मूरे), R.B. Perry (पेरी), Durant Drake (ड्रेक), B. Russell (रसेल) आदि वस्तुवादियों द्वारा प्रत्ययवाद की घोर आलोचना हुई है।

Scanned by CamScanner

(i) Moore (मूर) - द्वारा आलोचना - मूर ने अपनी विशिष्ट विश्लेषणात्मक पद्धति से प्रत्ययवाद की आलोचना की है संवेदनाओं के रूप रंग गुण आदि का अन्तर कैसे और क्यों होता है? क्या इस भेद का आधार हमारी चेतना में है या बाह्य जगत की वास्तविक वस्तु में? यदि यह मान लें कि चेतना से स्वतंत्र वस्तु नहीं है, तब तो यही कहा जा सकता है कि भेद का आधार चेतना में है। परन्तु मूर का कहना है कि चेतना या आंतरिक अनुभूति में अन्तर नहीं होता। संवेदनों में अन्तर विषय, अर्थात लाल और पीला में अन्तर होने के कारण होता है। इससे यही सिद्ध होता है कि चेतना से स्वतंत्र वस्तुओं का अस्तित्व है, जो संवेदनों में भेद का आधार है।

(ii) ड्रेक का तर्क - हमारा साधारण अनुभव प्रत्ययवाद का समर्थन नहीं करता। हमारे अनुभव में एक प्रकार की विवशता पाई जाती है। वस्तुएँ जब और जिस रूप में हमारे सामने उपस्थित होती हैं हमें उन्हें बरबस देखना पड़ता है। हम अपनी इच्छा और अपने मन के अनुसार वस्तुओं को नहीं देख पाते। यदि वस्तुओं का अस्तित्व हमारे मन पर आश्रित रहता तो अनुभव में यह विवशता नहीं रहती। इससे सिद्ध होता है कि वस्तुओं का अस्तित्व ज्ञान या मन पर निर्भर नहीं है।

(iii) ड्रेक के अनुसार प्रत्ययवाद का अंत सर्वाहंवाद (Solipsism) में होता है। यदि मन से स्वतंत्र किसी किसी वस्तु का अस्तित्व नहीं है, तो इसका अभिप्राय यही होता है कि मन और इसके प्रत्यय वास्तविक हैं। यह हमारे बाह्य जगत में विश्वास पर गहरा आघात पहुँचाता है हम बाह्य जगत को सत्य मानकर व्यावहारिक जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं।

Scanned by CamScanner

(iv) पेरी प्रत्ययवाद में अहंकेन्द्रित विषमावस्था का दोष (Fallacy of egocentric predicament) पाते हैं। ज्ञात होना तथा अस्तित्ववान होना दोनों दो चीजें हैं। प्रत्ययवाद इन्हें एक समझ लेता है। यह सत्य है कि ज्ञात होने के लिए किसी वस्तु का ज्ञाता या मन से संबंद्ध होना आवश्यक है। परन्तु इससे यह नितकर्ष निकालना कि अस्तित्ववान होने के लिए वस्तु का ज्ञाता या मन से संबंद्ध होना आवश्यक है सर्वथा गलत है। यह अहंकेन्द्रित विषमावस्था का दोष कहलाता है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्ययवाद ज्ञेय की स्थिति के संबंध में एक संतोषप्रद एवं निर्दोष सिद्धान्त नहीं कहा जा सकता।

Scanned by CamScanner